शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Year -1
Vol -6
April
2024

बदलते समाज और चुनौतियां और महिलाओं की भूमिका

संजय कुमार गौतम
सहा. प्राध्यापक - समाजशास्त्र
राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त महाविद्यालय, चिरगांव

शोध सार

भारतीय महिलाएं, समाज में गहरे परिवर्तनों का सामना कर रही हैं। वर्तमान समाज की सामाजिक संरचना में उनकी भूमिका में वृद्धि हो रही है। यह विकास उन्हें नई स्वतंत्रता, समानता, और समाज में प्रमुख भूमिकाओं में शामिल होने का अवसर प्रदान कर रहा है। समाज में बदलाव के साथ, भारतीय महिलाएं शिक्षा, रोजगार और सार्वजनिक जीवन में अधिक सक्रिय भूमिकाओं में प्रवृत्ति कर रही हैं। उन्हें नई-नई संभावनाओं का सामना करना पड़ रहा है, लेकिन साथ ही, वे आधुनिक चुनौतियों का सामना भी कर रही हैं। विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक परंपराओं के बीच टकराव, उच्चतम शिक्षा और रोजगार की मांग, साथ ही उच्च और न्यायिक स्तर पर समाज में समानता की मांग, ये सभी चुनौतियां हैं जिनका सामना भारतीय महिलाएं कर रही हैं। भारतीय महिलाएं न केवल समाज में परिवर्तन के स्रोत हैं, बल्कि वे समाज को एक समृद्धि और समानता की दिशा में आगे बढ़ने के लिए चुनौतियों का सामना कर रही हैं।

बीज शब्द

समृद्धि, सांस्कृतिक, संभावनाएं, चुनौतियाँ, सक्रिय, परिदृश्य, परिवर्तन, समानता।

भूमिका

भारतीय महिलाओं को समाज के रूप, रंग और सांस्कृतिक माध्यमों में महत्वपूर्ण परिवर्तनों के साथ-साथ समाज में व्याप्त चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है। यह परिचय उन बदलते सामाजिक परिदृश्यो और चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित है जो भारतीय महिलाओं को उनके सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भ के फलस्वरूप करना पड़ रहा है। समाज में बदलते सांस्कृतिक दृष्टिकोण ने भारतीय महिलाओं को नए स्वरूप में स्थान्तरित किया है। सामाजिक व्यवस्था, शिक्षा, और रोजगार क्षेत्र में परिवर्तनो ने महिलाओं को नए अवसरों और अधिकारों की दिशा में आगे बढ़ने का मौका दिया है। हालांकि, इसके साथ ही चुनौतियां भी उत्पन्न हुई

हैं, जैसे कि लिंग भेद,रोजगार और वेतन की समानता और परंपरागत भूमिकाओं के साथ जुड़े तात्कालिक मुद्दे। विशेषकर, शिक्षा क्षेत्र में भी अब महिलाएं उच्च शिक्षा में रुचि लेने के लिए उत्सुक हो रही हैं, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में और विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भों में अभी भी शिक्षा के वहाँ तक पहुँचने की समस्याएं बनी हुई हैं। भारतीय महिलाओं को अधिकारों की पहुंच बढ़ाने और उन्हें समाज में समाहित बनाने के लिए सामाजिक रूप से सुधार की आवश्यकता है। इस परिचय का उद्देश्य यह है कि विभिन्न सांस्कृतिक और सामाजिक सीमाओं के बावजूद, भारतीय महिलाएं समाज में अपनी जगह बना रही हैं और इस प्रक्रिया में आ रही चुनौतियों का भी डटकर सामना कर रही हैं।

प्राचीन काल में, महिलाओं को अक्सर घर के बाहर काम करने की अनुमति नहीं दी जाती थी, और उनका मुख्य कार्य घर में ही था। उन्हें आमतौर पर चूल्हा चलाने और घरेलू कामों का संभालने का कार्य सौंपा जाता था। प्राचीन समय में, सामाजिक परंपरा के अनुसार, संयुक्त परिवार प्रथा आम थी, जिसके कारण बड़े परिवारों में सभी कार्यों का वितरण मुख्य रूप से घर की महिलाओं के हाथों में होता था।

शोध विस्तार

मानव स्वभाव से ही सामाजिक प्राणी है। सामाजिक प्राणी होने के नाते उसके जीवन के विविध क्षेत्रों से संबंधित अनेक प्रकार की क्रियाओं का सम्पादन करना पड़ता है। जिनमें आर्थिक क्रिया सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है। आर्थिक क्रियाशीलता मनुष्य की उन सभी क्रियाओं में से महत्वपूर्ण है, जिससे वह अपना शारीरिक जीवन व अस्तित्व बनाये रखता है। मनुष्य की आवश्यकतायें अनन्त होती है जिनकी पूर्ति करना मनुष्य के लिए आवश्यक होता है। भूख, यौन इच्छा एवं संवेगी अनुक्रिया ऐसी ही आवश्यकतायें हैं। उन्हे संतुष्ट न करने का परिणाम जीवन लीला की समाप्ति या सामान्य जीवन प्रणाली का अस्त-व्यस्त होना हो जाता है। मनुष्य इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयास करता रहता है। आज आधुनिकता का मानव जीवन से सीधा संबंध है। समय के बदलते परिवेश के साथ मनुष्य ने अपनी आवश्यकताओं में भी परिवर्तन किया, यही परिवर्तन धीरे-धीरे आधुनिकता का रूप लेने लगी। जहाँ तक भारत में 'आधुनिकता' का प्रश्न है, वह गुलामी के समय से ही प्रारंभ हो गया था। जब अंग्रेज इस देश को अपने अधीन अपनी पश्चिमी सभ्यता की परतें इस देश के ऊपर जमाने लगे थे। आजादी के बाद देश में तीव्र गति से सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक क्षेत्र में परिवर्तन हुआ। लोगों में जागरूकता बढ़ी, शिक्षा के स्तर में परिवर्तन हुआ। औद्योगीकरण की प्रणालियों विकसित हुई, संचार एवं आवागमन के साधनों में विकास हुआ। आधुनिक युग

प्रौद्योगिकी का युग है प्रौद्योगिकी के प्रयोग ने आधुनिकीकरण को बढ़ावा दिया है। आधुनिकीकरण का प्रभाव समाज के हर क्षेत्र पर पड़ा है। ग्रामीण समाज भी आधुनिकीकरण से प्रभावित हो रहा है।

किसी भी समाज की उन्नति व प्रगति उसके मानवीय संसाधनों स्त्रियों व पुरुषों के बीच समानता पर निर्भर करती है। ये ही सामाजिक संरचना के आधार स्तम्भ होते हैं। पूर्ण एवं निरन्तर विकास के लिए आवश्यक है कि दोनों आधार स्तम्भ अर्थात् स्त्री व पुरुष मिलकर समाज निर्माण में योगदान दें। परन्तु अल्प विकसित व विकासशील देशों के सन्दर्भ में यह अवधरणा मात्र कल्पना ही साबित होती है। हमारे समाज में पारम्परिक रूप से प्रदत्त सत्ता में पुरुष एक मुख्य भूमिका अदा करता आया है। निर्णयकारिता के प्रत्येक स्तर पर पुरुष अपना पारम्परिक हक जताता रहता है। इसके पीछे इसका तर्क है कि वह ही निर्णय लेने में सक्षम है। यद्यपि हमारे देश में महिलाओं को देवियों की मान्यता दी गयी है। लेकिन कालान्तर में उनके कार्य और उनके योगदान और उनकी प्रतिष्ठा को समाज की मुख्य धारा से दूर कर दिया गया। सिंधु सभ्यता में स्त्री रूपों को ही अधिक पूजा जाता था। हड़प्पा की खुदाई से मिली एक मूर्ति में स्त्री के गर्भ से एक पौधे को निकलता हुआ दिखाया गया है। जिसे इतिहासकार पृथ्वी देवी की मूर्ति बताते हैं। इसी प्रकार की और भी अनेक मूर्तियां मिली हैं जो महिलाओं की श्रेष्ठ स्थिति को उजागर करती हैं। समकालीन मेसोपोटामिया सभ्यता के आधार पर कुछ इतिहासकर मानते हैं कि सिंधु समाज मातृ-सत्तात्मक था और राज्य व सम्पति का उत्तराधिकार कन्याओं को मिलता था। भारत के आज भी कई राज्यों में मातृ सत्तात्मक पारिवारिक व्यवस्था आज भी विद्यमान है जिससे यही धारणा पुष्ट होती है कि प्राचीन भारतीय समाज में की स्थिति पुरूषों के मुकाबले श्रेष्ठ थी।

हमारा देश भारत प्राचीन काल से ही कृषि व ग्राम प्रधान रहा है। 2011 की जनगणना के अनुसार देश की कुल जनसंख्या का 67 प्रतिशत गांवों में निवास करती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सरकार ने ग्रामीण समुदाय के विकास पर ध्यान दिया। सरकार द्वारा ग्रामीण विकास को गतिशील करने के उद्देश्य से सामुदायिक विकास योजना 1952 एवं राष्ट्रीय विस्तार योजना 1953 प्रारम्भ की गयी परन्तु दुर्भाग्यवश यह योजनायें अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकी। बलवन्त राय मेहता कमेटी 1957 की संस्तुतियों के आधार पर त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था सन् 1959 में देश में लागू की गयी। अशोक राय मेहता कमेटी 1977 तथा जी वी.के राव कमेटी 1985 ने पंचायती राज व्यवस्था को व्यक्तिोन्मुखी बनाने हेतु अमूल्य सुझाव दिये।

महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में कई प्रकार की शंकायें भी सामने आती है। जो अनेक प्रकार की भ्रांतियां पैदा करती है। क्या वास्तव में हम महिलाओं को सशक्त करना चाहते हैं क्या वास्तव में इससे पहले महिला उद्धार के लिए कोई नियम कानून नहीं बनाये गये थे क्या महिलायें अपने राजनैतिक अधिकार प्राप्त करने के लिए वास्तव में लड़ाई लड़ेगीं महिलायें किस तरह संवैधानिक जिम्मेदारी निभायेगीं और अपना कर्तव्यपालन करेगीं जबकि उनका एक बड़ा प्रतिशत अभी भी अशिक्षित एवं राजनैतिक क्षितिज पर अनुभव शून्य है वे इन बदली परिस्थितियों में सामंजस्य कैसे स्थापित कर पायगी उन्हें जन/सभाओं के लिए अधिक समय देना पड़ेगा। रात में घर के बाहर रहना पड़ सकता है। पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर चलना होगा। ऐसे निर्णय भी लेने होंगे जो अक्सर पुरुषों के विरुद्ध होंगे। वे किस प्रकार से दूसरों के लिए स्वतंत्र एवं निष्पक्ष निर्णय ले सकेंगी जबकि वे अभी अनेक प्रकार से पुरुषों पर ही निर्भर रहती हैं। कभी पुत्री के रूप मे तो कभी पत्नी के रूप में कभी माता के रूप मे वे गलाकाट राजनैतिक प्रतिद्वन्दता का जिसका कोई अन्त नहीं होता है। किस प्रकार सामना करेंगी लगातार अमानवीय अत्याचारों के प्रति वे स्वयं व समाज को कैसे जागरूक कर सकेगीं। वे अन्य सामाजिक संस्थायें जैसे पुलिस व न्यायालय में अपने ऊपर लगे भ्रष्टाचार के आरोपों पर अपना पक्ष किस प्रकार रखेंगी जबकि कई बार ऐसे आरोप उनकी अपनी गलती से नहीं बल्कि दूसरों की साजिश व गलती की वजह से ही लगेंगे। क्या महिलायें ऐसी सिद्धहस्त कूटनीतिज्ञ हो सकेंगी कि वे ऐसे हमलों से अपना बचाव कर सकें पंचायती राज संस्थाओं के साथ वह कैसा कार्यानुभव करेगी।

राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं का वास्तविक पर्दापण 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ के प्रथम दशक के भारतीय समाज में, पुरुषों को अक्सर आधिकारिक और आर्थिक दृष्टि से प्रमुख माना जाता है। पुरुष अक्सर बाहर के काम में लगते हैं, जबकि महिलाएं अपने घरेलू कार्यों का संभालने में जुटी रहती हैं। बच्चों की परवाह और परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति करना उनका मुख्य कार्य होता है। आर्थिक उत्पादन अक्सर उनकी प्राथमिकता नहीं होती। हालांकि, यह सत्य है कि प्राचीन काल से ही महिलाएं प्रकृति द्वारा प्रदत्त वस्तुओं और कृषि कार्य में संलग्न रही हैं, लेकिन आधुनिक युग में महिलाएं कामकाजी होने के साथ-साथ सफल गृहणियाँ भी बन रही हैं। इसके बावजूद, यह अनदेखा नहीं किया जा सकता कि महिलाएं सभी कार्यों का सामायिक संतुलन कैसे बना सकती हैं। आधुनिक युग में, कामकाजी महिलाएं अपनी भूमिका को समझती हैं और वैश्विक दृष्टिकोण के साथ बदलते समय के साथ समायोजन करने में सक्षम हो रही हैं। सरकारी या निजी क्षेत्र में काम करने के साथ-साथ, घरेलू कार्यों में भी उनका सक्रिय प्रबंधन बखूबी दिखाई देता है।

शिक्षा के क्षेत्र में सुधार होने के साथ-साथ, नई तकनीकी प्रगति के प्रकाश में, महिलाएं भी पुरुषों के साथ हर क्षेत्र में आगे बढ़ने में सक्षम हो रही हैं। भारत में अब प्रत्येक घर की महिलाएं घर के बाहर या घर में कुछ ना कुछ आय अर्जित करने में जुटी हैं। वे स्वयं को गतिशील रखने के लिए निजी जीवन में भी प्रयासरत हैं। कामकाजी महिलाएं अपने परिवार और अपने भविष्य को संवारने के लिए काम करती है।

निष्कर्ष

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में हो रहे बदलाव और उनके सामने उत्तरदातृत्व बढ़ने वाली चुनौतियों का सामरिक, सामाजिक और आर्थिक परिप्रेक्ष्य से विश्लेषण करते हुए, हम देख सकते हैं कि इस संदर्भ में समाज में पैदा हो रहे परिवर्तन और चुनौतियों का सामना कर रही महिलाएं आत्मनिर्भरता, समानता और सामाजिक समरसता की दिशा में कदम से आगे बढ़ रही हैं। आत्मनिर्भरता की दिशा में हुए परिवर्तन को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है। आजकल के युवा महिलाएं शिक्षा, करियर और व्यापार में अपना स्थान बना रही हैं और खुद को स्वायत्त बनाने के लिए प्रयासरत हैं। सरकार द्वारा शुरू की जा रही विभिन्न योजनाएं और विशेषकर महिलाओं के लिए बनाई गई ऋण योजनाएं ने उन्हें आर्थिक रूप से स्वायत्त बनाने में मदद की हैं। इसके परिणामस्वरूप, महिलाएं अपने पूरे पोटेंशियल को पहचान रही हैं और समाज में अपनी दिनचर्या में सकारात्मक परिवर्तन ला रही हैं। समाज में समानता की अर्थात महिला-पुरुष के बीच समानता की बढ़ती गहराई ने महिलाओं को समाज में सक्रिय भागीदार बना दिया है। समाज में चल रहे सामाजिक बदलाव ने लोगों को जागरूक किया है और महिलाओं को उनके अधिकारों की प्राप्ति के लिए समर्थ बनाया है। महिलाओं को नौकरी, शिक्षा, राजनीति और विभिन्न क्षेत्रों में मिल रहे अवसरों में समानता के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है, लेकिन उनका समर्थन भी बढ़ रहा है। समाज में सामाजिक समरसता की दिशा में हुए परिवर्तन का अंग्रेजी कहावत "एक हत्यारा, सौ चोर" के साथ तुलना किया जा सकता है। महिलाओं को समाज में समरसता और सामाजिक समरसता की दिशा में अपने प्रयासों के बावजूद, वे अब भी रूढ़िवाद, जातिवाद और विभिन्न अनैतिक प्रथाओं का सामना कर रही हैं। उन्हें समर्थन मिलने में ज्यादा समय लग रहा है, लेकिन यह एक सावधानीकृत प्रक्रिया है जो समय के साथ सामाजिक परिवर्तन की दिशा में सहारा प्रदान करेगी। भारतीय महिलाओं की स्थिति में हो रहे बदलाव और चुनौतियों का सामरिक, सामाजिक और आर्थिक परिप्रेक्ष्य से हम देख सकते हैं कि महिलाएं आत्मनिर्भरता, समानता और सामाजिक समरसता की दिशा में अपने कदम बढ़ा रही हैं। यह एक सकारात्मक संकेत

है कि समाज में समृद्धि और सामाजिक न्याय की दिशा में हम प्रगति कर रहे हैं, जिससे समृद्धि की सामाजिक और आर्थिक स्थिति होगी।

संदर्भ सूची

1. थरकन, एस.एम./ भारत में महिलाओं की स्थितिः एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य
2. त्सोसी, आर/ बदलती महिलाएँ: अमेरिकी भारतीय स्त्री पहचान की अंतर्धाराएँ
3. चक्रपाणि, सी. और कुमार, एस.वी./ भारतीय समाज में महिलाओं की बदलती स्थिति और भूमिका।
4. सिंह, के./ भारतीय समाज में महिला एवं शिक्षा
5. आहूजा, राम/ भारतीय सामाजिक समस्यायें
6. ग्रामीण महिला सशक्तिकरण/ कुरूक्षेत्र-पत्रिका/ मार्च 2008